CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

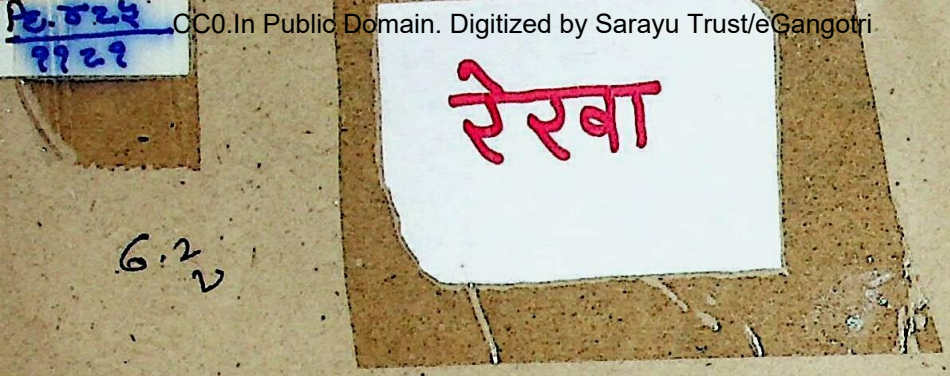

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का अन्य रचनायः—

..... प्राप्ति-संख्या.....
ग्रन्थ-कार्ड
वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान
ग्रन्थागार
नरिया, वाराणसी-५
.....
.....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११८१

कृपया इस ग्रन्थको निम्नांकित तिथि पर या उसके पूर्व
लौटा दें। विलम्बसे लौटानेपर ५ पैसे
प्रतिदिन दण्ड देना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रेखा

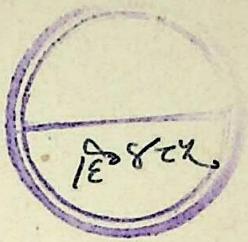

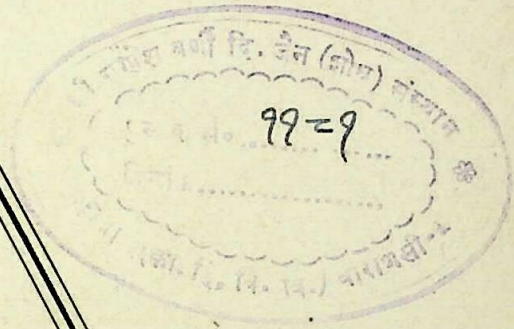

कुमारी शांति एम ए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम संस्करण १९४७—मूल्य १॥)

प्रकाशक—आर० के० टंडन, एम० ए०
लक्ष्मी स्टोर्स, लाटूश रोड,
लखनऊ.

सर्वाधिकार स्वरक्षित

मुद्रक—पं० भृगुराज भार्गव
भार्गव-प्रिंटिंग-वर्क्स,
लखनऊ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

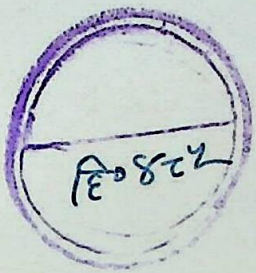

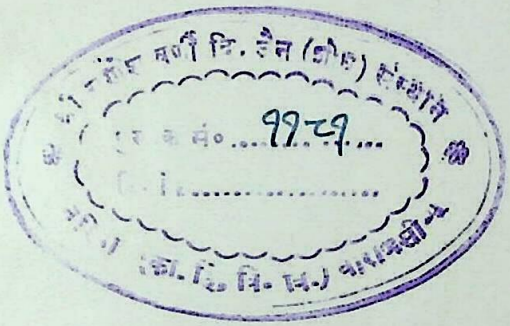

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

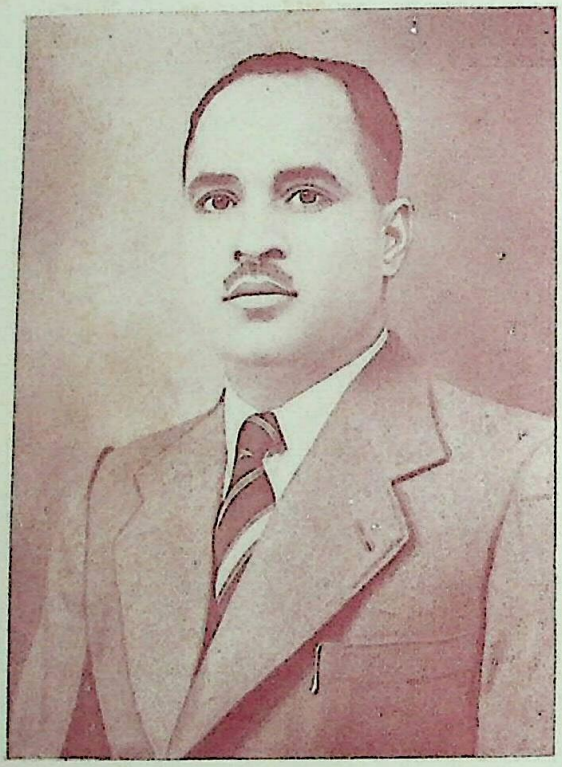

मामा जी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'रेखा' को गोदी में लेकर मामी खड़ी उदार,
माँग रहे अपनी गोदी में मामा हाथ पसार।
सिखा पढ़ा मामी ने रक्खा, नहीं गोद में आई,
लगीं देखने मुझको मामा की आँखें ललचाई।
किंतु गोद के योग्य न मैंने जब अपने को देखा,
मामा की गोदी में रख दी यह छोटी सी "रेखा"।

शांति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब—

अपनी कविता के विषय में
कुछ कहने का
मन नहीं।

शांति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nariya, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

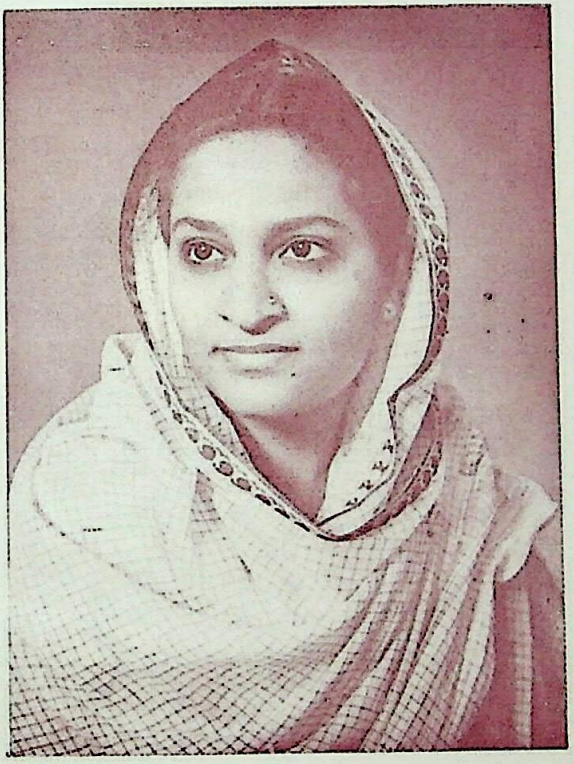

शांति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कविता-क्रम

१	गीत लिखना पुण्य भी है, पाप भी है	१
२	बुझाने चली हृदय की प्यास	३
३	है कर्म किसका; फल किसे	४
४	सह सके पङ्ख नहीं क्या भार	६
५	विश्वास का अवलम्ब था	७
६	अन्ततः मुझको जग से काम	८
७	इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो	९
८	सिंधु से घन दूर कितना	१४
९	अब तो कुछ ही दिन की बात	१५
१०	मेरे गीत फिर भी मौन	१६
११	जग का प्रति नियम विपरीत	१७
१२	नहीं अच्छा है उपसंहार	१९
१३	बीत चुके सुख दुख के क्षण भी	२०
१४	नियति का भी क्या इसमें दोष	२१
१५	इतनी दूरी तो दूर नहीं	२२
१६	देख मुझे हँसने का मन है	२३
१७	जान ले यदि यह पूजित देव कि उसका स्वागत अन्तिम बार	२४
१८	प्राप्त हो आख़िर किसमें हर्ष	२५
१९	अब मैं नहीं विरोध करूँगी	२६
२०	सामने रक्खा गरल है	२७
२१	नहीं होता सबको सन्तोष	२८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२	अवहेलना सब ओर से	२९
२३	कुछ क्षणों में सब लिया पहिचान	३०
२४	साथी कैसा यह सूनापन	३१
२५	हो चुकी बहुत पुरानी बात	३२
२६	कभी हो भी यदि ऐसी बात	३३
२७	उद्देश्य अब तक तय नहीं	३४
२८	अब यह सोचना बेकाम	३५
२९	रह निर्दोष लेना दोष	३६
३०	अब तो हँसना है केवल लत	३९
३१	साथी दीवाली की रात	४०
३२	मुझको और हज़ारों हैं दुख	४१
३३	मौनतम आराधना मेरी न कोई जान पाया	४२
३४	मुझसे कमी विरोध न सम्भव	४५
३५	पाई नहीं पूरी विजय	४६
३६	कविता न अब वरदान है	४७
३७	चलेगा कब तक यह संग्राम	४८
३८	व्यर्थ होंगे तब मेरे गीत	४९
३९	सबकी जीत सबकी हार	५०
४०	मिल गया बस एक तारा	५१
४१	कल तक पूरा नीड़ बनेगा	५२
४२	अब तो नीड़ के निर्माण में मैं व्यस्त आठो याम ...	५३
४३	माँगता है रवि किरण पसार	५४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गीत लिखना पुण्य भी है, पाप भी है !

पुण्य है, कारण किसी का प्यार इसमें ;
पाप है, उन्मुक्त हाहाकार इसमें ;
है विषमता कुछ यहाँ ऐसी अनोखी ,
शांति से हँस खेलते अंगार इसमें ;
यदि किसी को दे गये वरदान हैं ये; तो किसी को दे चुके अभिशाप भी हैं !
गीत लिखना पुण्य भी है, पाप भी है !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है जहाँ इतना विशद तूफ़ान आता,
स्वाति का लघु कण वहीं पर घर बनाता;
दूर देशों को किया करता उदधि जो,
भूमि को है व्योम से वह ही मिलाता;
लघु लहर उर-सिंधु में उठती, थिरकती; निहित उसमें हर्ष भी, संताप भी है!
गीत लिखना पुण्य भी है, पाप भी है!

गीत ये मेरे किसी को पीर देते;
मौन उर को मुग्ध करते, चीर देते;
बाँधकर जो विश्व को फिर टूट जाती
है अचानक, वह सुदृढ़ ज़ंजीर देते;
वेदनायें व्यक्त कर निज राग स्वर में, हो गए चुपचाप अपने आप ही हैं!
गीत लिखना पुण्य भी है, पाप भी है!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुझाने चली हृदय की प्यास !

साथ में जलकण का ले कोष ;
साथ में जीवन का ले कोष ;
साथ में नवघन का ले कोष ;
साथ में सावन का ले कोष ;
पलक से छूकर के चुपचाप, स्वाति से सना हुआ आकाश !
बुझाने चली हृदय की प्यास !

भाव कर इन छंदों में बंद ;
चाव कर प्रतिबंधों में बंद ;
चाहती पीना हूँ मकरंद ;
नापती ले आशा की माप, तुष्टि मानव के कितने पास !
बुझाने चली हृदय की प्यास !

किसी के हित बनकर के साध्य ;
किसी के हित बनकर आराध्य ;
पूज कर जग का कण कण, और माँग कर मानव से सन्यास !
बुझाने चली हृदय की प्यास !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है कर्म किसका; फल किसे !

वह भूमि की थी प्यास ,
जिसने रश्मियों के हाथ से ,
था दूर हिमकण को किया ,
लघु-लहरियों के साथ से ;
था लहलहाते खेत ने धर हाथ छाती पर कहा—
"उत्पल किसे; उत्पल किसे !
है कर्म किसका; फल किसे !"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुर्बल भुजाएँ खोल, सरिता
ने छुये सूखे अधर ;
फिर कुछ प्रलोभन से बढ़ी थीं
सिंधु तट पर साल भर ;
बीहड़ वनों ने, उपवनों ने, चूस पावस को कहा—
"पर जल किसे; पर जल किसे !
है कर्म किसका, फल किसे !"

थे बादलों के पंख नभ में
छाँह के हित डोलते ;
निज भार को वे दूसरे की
शक्ति से थे तोलते ;
लख सीपियों में विंदु को, सोते हुये घन ने कहा—
"संबल किसे; संबल किसे !
है कर्म किसका; फल किसे !"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सह सके पंख नहीं क्या भार ?

स्वाति पाने का मौन प्रयत्न,
कर चुका उसे सीप का रत्न,
मान करके इसको ही सत्य, विहग नभ का लेता आधार !
सह सके पंख नहीं क्या भार ?

व्योम का अस्थिर हृदय उदार,
छोड़ करके जलकण सुकुमार,
उतर कर, छूकर सागर मुक्त, पुनः पाता है कारागार !
सह सके पंख नहीं क्या भार ?

देख बादल का टुकड़ा एक,
रुके भावों के विहग अनेक,
गगन का चंचल संबल छोड़ उतरते जहाँ कि है पतझार !
सह सके पंख नहीं क्या भार ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्वास का अवलंब था !

थक कर चरण जब रुक गया,
यह भाल उन्नत झुक गया,
तब भी मुझे गतिहीन, दुर्बल श्वास का अवलंब था !
विश्वास का अवलंब था !

जब मान मिल पाया नहीं,
जब गान मिल पाया नहीं,
जग के विमोहित नेत्र का, उपहास का अवलंब था !
विश्वास का अवलंब था !

संतुष्टि सागर में नहीं,
उन्मुक्ति गागर में नहीं,
मुझको सुखद-सौदामिनी की प्यास का अवलंब था !
विश्वास का अवलंब था !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंततः मुझको जग से काम !

इसी रज कण से है संबंध,
इसी मधुवन से है संबंध,
इसी जीवन से है संबंध,
इसी बंधन से है संबंध,
यही तो है वह पावन लोक, जहाँ विश्राम, जहाँ संग्राम !
अंततः मुझको जग से काम !

भाग्य-अलि का संसृति पर गान,
कर्म का मधुर नीड़-निर्माण,
भूमि, जो है सुख-दुख में लिप्त, वस्तुतः कर देना अभिराम !
अंततः मुझको जग से काम !

किसी को मिलता है इतिहास,
किसी को मिलता है विश्वास,
किसी को मिलता सतत प्रयास,
किसी को मिलता है उपहास,
कहीं पर प्यास, कहीं सन्यास, कहीं पर नाम, कहीं बदनाम !
अंततः मुझको जग से काम !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो !

केवल अभी चार लोगों का
ही उपहास मिला है ;
केवल मिट्टी के तन का ही
मौन विनाश मिला है ;

अभी प्राण-प्रहसन का केवल
सूत्रधार ही आया ;
रंगमंच के अभिनय का भी
कब आभास मिला है ;
अरे ! अभी से असफलता कर अंगीकार रहे हो !
इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माना राह अकेली, भय का
लगना स्वाभाविक है;
माना चाह अकेली, उस पर
भी विश्वास क्षणिक है;

जड़ मानव के कुशल करों की
प्राप्त नहीं छाया यदि;
कहीं कहीं भावुक आहों की
छाया नैसर्गिक है;
कदम बढ़ाने को अब ही से हो लाचार रहे हो!
इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो!

कितनी जर्जरता है तेरी
रागमयी वाणी में;
कितनी शीतलता है तेरी
आगमयी वाणी में;

संशय की साकार उँगलियों
से भी जो बन जाती;
कितनी परवशता वीणा की
त्यागमयी वाणी में;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्या उस वाणी को ही अपना कर आधार रहे हो !
इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो !

अभी किसी का करुण हृदय कुछ
दुख सुख हर लेता है ;
अपनी और जगत की बीती
भी सुन भर लेता है ;

इतने पर भी यह तो यों ही
याद कभी आ जाता ;
अधिक दिनों विधि आत्मशान्ति का
कब अवसर देता है ;
क्यों सदैव ऐसे अवसर की बाट निहार रहे हो !
इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो !

कल जो कुछ होगा उसका
अनुमान कठिन करना है ;
कितने बंधन होंगे इसका
ध्यान कठिन करना है ;

कितने सपने सत्य और
कब कितने अपने होंगे ;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भले-बुरे की भी तो तब
पहिचान कठिन करना है;
कर न स्वयं को उस दिन के हित भी तैयार रहे हो!
इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो!

स्नेह दूर, पूजा का भी अधि-
कार न रह जावेगा;
साधन और सान्त्वना! सेवा-
भार न रह जावेगा;

'मुक्ति'! भला यह पगलों सा
बकवाद व्यर्थ करना है;
मेरे लिये विश्व में कारा-
गार न रह जावेगा;
यह जल है जिसको अब तक समझे अंगार रहे हो!
इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो!

अपनी आशा का नश्वर से
मोल भला लेना क्या;
अपनी भाषा का कवि स्वर से
मोल भला लेना क्या;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब प्रति श्वासों पर शतशत
आहों का तांडव होगा;
निबिड़ निराशा का निर्झर से
मोल भला लेना क्या;
अभी भूमिका है जिसको कर उपसंहार रहे हो!
इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो!

यह वैभव की विडंबना है
इसे न सच कह देना;
यह बहती गंगा है, इसमें
स्वयं नहीं बह लेना;

मानव सदा परिस्थितियों का
एक मात्र अनुचर है;
मेरे निर्दोषी मन जैसे
रहना हो, रह लेना;
वे सब थे कर्तव्य, समझते तुम अधिकार रहे हो!
इतने ही दुख से मन कैसे बोलो हार रहे हो!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिंधु से घन दूर कितना ?

नेत्र में जल-विंदु भर भर,
पूछती रहती निरंतर,
जो सदा रहता हरा, उस घाव से मन दूर कितना ?
सिंधु से घन दूर कितना ?

सीप को जो प्यास देती,
स्वाति को विश्वास देती,
उस मधुर ऋतु से, विरह से व्यग्र सावन दूर कितना ?
सिंधु से घन दूर कितना ?

देख जिसको ओस के कण,
हँस पड़े थे बालुका बन,
उस तृषित मरुभूमि से है शुष्क जीवन दूर कितना ?
सिंधु से घन दूर कितना ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब तो कुछ ही दिन की बात !

पीले पत्तों के पतझार
सा हिल उठा सभी का प्यार,
'तेरे आँसू पर प्रतिबंध', कहता, बहता गया प्रपात !
अब तो कुछ ही दिन की बात !

अस्त-प्राय रवि मौन ललाम,
अभी किए संध्या अभिराम,
पर इसका भी कौन प्रमाण, कभी न घिर आवेगी रात !
अब तो कुछ ही दिन की बात !

कंधों पर बादल का भार,
पवन करे क्यों अंगीकार,
नग्न ग्रीष्म पर के अभियोग, दूर करे तो क्यों बरसात !
अब तो कुछ ही दिन की बात !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरे गीत फिर भी मौन !

अब तो मर्म का अवसान,
अब तो कर्म का अवसान;
अब अलसित अधर पर राग, है संगीत फिर भी मौन !
मेरे गीत फिर भी मौन !

जो चाहा, न था संभाव्य,
जो सोचा, न था वह काव्य;
इन पर ही सधा जो सुप्त, दिव्य अतीत फिर भी मौन !
मेरे गीत फिर भी मौन !

जग की नीति, जग की रीति
से सीमित न मेरी प्रीति;
निज से हार, पर जग से हुई जो जीत फिर भी मौन !
मेरे गीत फिर भी मौन !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जग का प्रति नियम विपरीत !

जिसने काल-पथ पर
रात फैलाई, किया शृंगार ;
रख कर शशि-मुकुट जो
डाल देती तारकों का हार ;
उसको ही विविध विधि नव-उषा करती रही भयभीत !
जग का प्रति नियम विपरीत !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो कर फूल को तितली
समझ, आए नहीं थे पास;
उन पर अग्नि रखना क्या
नहीं है अग्नि का उपहास;
मन की वेदना को कवि बनाता मधुर राग पुनीत!
जग का प्रति नियम विपरीत!

वह सौरभ कि जो करता रहा
अलि-वृंद को स्वच्छंद;
पगला कवि उसी पर कर रहा
अब छंद का प्रतिबंध;
वह निश्चित किसी की हार जो समझी गई है जीत!
जग का प्रति नियम विपरीत!

वीणा चीखती है असह्य
सहना बार बार प्रहार;
कोई अधखुले से नेत्र
करते मद-भरी चीत्कार;
सुनकर मनचले कुछ लोग उसको कह उठे संगीत!
जग का प्रति नियम विपरीत!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं अच्छा है उपसंहार !

चेतनाएँ न बनें साकार,
प्रेरणाएँ न बनें साकार,
वेदनाएँ न बनें साकार,
भावनाएँ न बनें साकार,
हृदय की दिव्य कुटी में, मौन मूर्तिवत हो न किसी का प्यार!
नहीं अच्छा है उपसंहार !

भली हैं बातें रह कर दूर,
भली हैं रातें रह कर दूर,
भली बरसातें रह कर दूर,
सत्य से मुझको लगा पवित्र, स्वप्न का ही कोमल आधार !
नहीं अच्छा है उपसंहार !

दूर कुछ और, पास कुछ और,
वस्तु कुछ और, भास कुछ और,
मृत्यु की मधुछाया में बैठ भला लगता नर को संसार !
नहीं अच्छा है उपसंहार !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीत चुके सुख दुख के क्षण भी !

बीती भावों की दुर्बलता,
बीती चावों की चंचलता,
बीत चुका है अल्हड़ मन का भूला-भटका पागलपन भी !
बीत चुके सुख दुख के क्षण भी !

आमों पर कोयल की वाणी,
मौन हुई लिख एक कहानी,
रुक न सका था जब पतझड़ भी, रह न सकेगा यह सावन भी !
बीत चुके सुख दुख के क्षण भी !

जीवन खेला संघर्षों से,
यौवन खेला आदर्शों से,
दुनियाँ खेला करी अभी तक —
मेरे गत इक्किस वर्षों से;
बीत चुका है इसी तरह से आधे से ज़्यादा जीवन भी !
बीत चुके सुख दुख के क्षण भी !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नियति का भी क्या इसमें दोष !

दबा देने को जग की क्रांति,
चली लेकर के स्वयं अशांति,
मिली जो असफलता वह मुझे कभी यदि दे न सकी संतोष !
नियति का भी क्या इसमें दोष !

फूल की शैया पर थे शूल,
साथ में अपनों के प्रतिकूल,
हो गई डर, दोनों से दूर, हुआ प्रतिफल में निज पर रोष !
नियति का भी क्या इसमें दोष !

परिस्थितियों का नर है दास,
विजय का किंतु उसे विश्वास,
मिली यदि फिर भी उसको हार, भाग्य निर्दोष; विश्व निर्दोष !
नियति का भी क्या इसमें दोष !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In.Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतनी दूरी तो दूर नहीं !

जितनी चंदा में, तारों में ;
घन के घाटों में, धारों में ;
अथवा मन, मन के भावों में ;
अथवा सरिता में, सागर में !
इतनी दूरी तो दूर नहीं !

पंखों में, चल-पथ की इति में ;
जीवन में, संसृति की गति में ;
अथवा प्राणी, परमेश्वर में ;
अथवा पूजा में, पत्थर में !
इतनी दूरी तो दूर नहीं !

इन श्वासों में, इतिहासों में ;
अभ्यासों में, विश्वासों में ;
छंदों के बंधन में, रस में ;
अथवा कविता में कवि-स्वर में !
इतनी दूरी तो दूर नहीं !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देख मुझे हँसने का मन है !

दिन के कंधों पर अस्ताचल,
बैठा मचला, रूठा, विह्वल,
कहता 'अलि बन कर मुझको शतदल में फँसने का मन है !'
देख मुझे हँसने का मन है !

श्वासों की रज, जीवन का जल,
पाकर के कच्चा जगतीतल,
कीचड़ करते, जिसमें शतदल कहता है—धँसने का मन है !
देख मुझे हँसने का मन है !

मेरा भोला मन राही बन,
चलता जिसको पाने प्रतिक्षण,
उलझा, उकताया सा, उन्मन,
करके कुछ प्रण, लेकर कुछ व्रण ;
किंतु लक्ष्य जब कहता—'मेरा आज इसे डसने का मन है !'
देख मुझे हँसने का मन है !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जान ले यदि यह पूजित देव कि उसका स्वागत अंतिम बार !

कि कल मंदिर होगा सुनसान,
मूर्ति रह जावेगी पाषाण,
कहाँ पर भक्त, कहाँ भगवान;
करेगा सूनेपन का भास, एक क्षण तो वह हृदय उदार !
जान ले यदि यह पूजित देव कि उसका स्वागत अंतिम बार !

भक्त बनने की उसको प्यास,
भरेगी पहले तो उल्लास,
जान कर इसे किंतु उपहास;
कहेगा बंधन से हो मुक्त पुनः कैसे लूँ कारागार !
जान ले यदि यह पूजित देव कि उसका स्वागत अंतिम बार !

लुटा देगा वह अपना कोष,
रहेगा उसे न अपना होश,
मिलेगा पर न उसे संतोष;
सोचकर, थोड़े दिन के हेतु मिला था उसको क्यों यह भार !
जान ले यदि यह पूजित देव कि उसका स्वागत अंतिम बार !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राप्त हो आख़िर किसमें हर्ष !

एक पग पर जब सौ-सौ शूल,
एक अनुकूल, लाख प्रतिकूल ;
एक है निश्चय, शत शत राह,
एक मन जिसकी अगणित भूल ;
एक साहस पर कितने नाप, पतन हर ठौर, कहाँ उत्कर्ष !
प्राप्त हो आख़िर किसमें हर्ष !

शपथ ली मैंने कितनी बार,
करूँगी मैं सागर को पार ;
किंतु नौका जब कहती चीख़—
कहाँ पर घाट ? कहाँ मंझधार ?
सत्य उठता लेकर तूफ़ान, सुलाकर लहरों में आदर्श !
प्राप्त हो आख़िर किसमें हर्ष !

स्वयं से युद्ध, लोक से युद्ध,
विधाता क्रोधित, विश्व विरुद्ध ;
नियति विच्छिन्न, हृदय है क्षुब्ध,
चाह है, किंतु राह अवरुद्ध ;
कर चुका है कण कण विद्रोह, इधर संघर्ष, उधर संघर्ष !
प्राप्त हो आख़िर किसमें हर्ष !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब मैं नहीं विरोध करूँगी !

मुझमें दुर्बलता, औरों में ;
मुझमें भावुकता, औरों में ;
औरों की दुर्बल भावुकता पर न कभी मैं क्रोध करूँगी !
अब मैं नहीं विरोध करूँगी !

अपनी निधि सबको प्यारी है ;
अपनी विधि सबको प्यारी है ;
निधि पाने की विधि में आगे मैं न पंथ अवरोध करूँगी !
अब मैं नहीं विरोध करूँगी !

मैं जो करती, जग वह करता ;
पथ जो करता, पग वह करता ,
बनकर सुमन कभी काँटे के प्रति न प्रकट प्रतिशोध करूँगी !
अब मैं नहीं विरोध करूँगी !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामने रक्खा गरल है !

हाथ लोहू से सने हैं,
ओंठ फिर भी अनमने हैं;
सोचती हूँ, फेंकना या पान कर लेना सरल है !
सामने रक्खा गरल है !

मुँद गये दृग, सुन पड़ा स्वर—
पूज तू पाई न पत्थर,
जब कि प्याले से अधिक तेरी नहीं छाती सबल है !
सामने रक्खा गरल है !

जो झुकी जग के न आगे,
मृत्यु से वह भीख माँगे;
भीरु मानव यह किसी के प्रति विषम अन्याय, छल है !
सामने रक्खा गरल है !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं होता सबको संतोष !

भले ही सब का ले आदेश,
तजे सब हर्ष, सहे सब क्लेश,
पारखी केवल हैं दो चार; अरे ओ भोले इत्रफ़रोश !
नहीं होता सबको संतोष !

एक की इच्छाओं को मान,
बढ़े तो भी है भूल महान;
विश्व भर के व्यंगों के बाण,
न सह पायेंगे तेरे प्राण;
निगल लेगा तुमको सुकुमार; किसी का द्वेष, किसी का रोष !
नहीं होता सबको संतोष !

हो गई हूँ मैं तो अब तंग;
सभी के नये नये हैं रंग;
सभी के नये नये हैं ढंग;
चलूँ मैं आख़िर किसके संग;
नहीं यदि चलती तो अपराध; अकेले भी चलना है दोष !
नहीं होता सबको संतोष !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवहेलना सब ओर से !

पीना न चाहेंगे ज़हर
मधु के पिपासित यह अधर,
है भेद दोनों में नहीं, यह चेतना सब ओर से !
अवहेलना सब ओर से !

यह पग कुपथ पर, शूल पर,
चिल्ला उठा यह विश्व भर;
मैं छोड़ दूँ इसको अभी; यह प्रेरणा सब ओर से !
अवहेलना सब ओर से !

कोई घटा पाया न दुख,
कोई बँटा पाया न दुख;
इससे निराशा चाहती अब घेरना सब ओर से !
अवहेलना सब ओर से !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ क्षणों में सब लिया पहिचान !

हैं कमल में बंद क्यों अलि,
सोगई क्यों शूल पर कलि,
क्योंकि मिलना है उन्हें भी मुक्ति का मृदु दान !
कुछ क्षणों में सब लिया पहिचान !

क्यों चला रवि तम लुटाने,
रजनि, संध्या को सुलाने,
क्योंकि कर्मों में सदा ही है छिपा अवसान !
कुछ क्षणों में सब लिया पहिचान !

नीड़ प्राची ने जगाए,
पर विहग बाहर न आए,
क्योंकि सुनना चाहते हैं वे उषा के गान !
कुछ क्षणों में सब लिया पहिचान !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथी कैसा यह सूनापन !

आगे भी घर, पीछे भी घर,
दाएँ भी घर, बाएँ भी घर,
ऊपर भी घर, नीचे भी घर,
फिर भी इन आँखों के आगे, धुँधला बीहड़, उजड़ा निर्जन !
साथी कैसा यह सूनापन !

मैं भी मेरी, जग भी मेरा,
पथ भी मेरा, पग भी मेरा;
पर मधुवन वह कहाँ; कि जिसके
नीड़ों में ले विहग बसेरा;
पतझड़ अच्छा था, पर आया तो आँसू से लथपथ सावन !
साथी कैसा यह सूनापन !

आख़िर देख सकूँगी कब तक;
माथे पर सल, लटके मस्तक;
लिये शोक, उलझन, अनबन, शक;
फैले चारों ओर यही हैं कवि मन बहलाने के साधन !
साथी कैसा यह सूनापन,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो चुकी बहुत पुरानी बात !

बीत ही गये अनेकों वर्ष,
लिये आदर्श, लिये उत्कर्ष,
लिये विद्रोह, लिये संघर्ष;
लिये मधुऋतु की राका-रौप्य, लिये तममय काली बरसात !
हो चुकी बहुत पुरानी बात !

देख विहगों के नीड़ ललाम,
याद आती है ढलती शाम,
दिवस का जो लिखती परिणाम,
स्वप्न सा अब पड़ता है जान, रश्मि अंचल में उदित प्रभात !
हो चुकी बहुत पुरानी बात !

सह चुकी तब से कितनी हार,
किसी की घृणा, किसी का प्यार,
कहीं अपमान, कहीं सत्कार;
वस्तुतः उसके भी उपरांत सह चुकी कितने ही आघात !
हो चुकी बहुत पुरानी बात !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कभी हो भी यदि ऐसी बात !

कि अपने हो जाएँ प्रतिकूल ,
बनें यदि सुमन विहँस कर शूल ,
शिला बन, कर दे पथ अवरुद्ध; सलिल से ओत-प्रोत प्रपात !
कभी हो भी यदि ऐसी बात !

युगों से जिस पर हो विश्वास ,
कभी यदि कर दे वही निराश ,
शरद की सरल चन्द्रिका दिव्य, बने यदि सावन की बरसात !
कभी हो भी यदि ऐसी बात !

कभी भी जग के पास पुकार ,
नहीं कर पाऊँगी स्वीकार ,
भक्त बंदी के प्रति विद्रोह, कभी भी करता है जलजात !
कभी हो भी यदि ऐसी बात !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उद्देश्य अब तक तय नहीं !

कल्याण की दृढ़-भावना,
आराध्य की आराधना—
निश्चित, मगर वह किस तरह यह हो सका निश्चय नहीं !
उद्देश्य अब तक तय नहीं !

बिखरा सभी दूँ, लूँ न कुछ,
अथवा स्वयं भी दूँ न कुछ;
है एक करना, क्योंकि जीवन मौन क्रय-विक्रय नहीं !
उद्देश्य अब तक तय नहीं !

माना कभी भय भी नहीं,
पाई कभी जय भी नहीं,
परिचय नहीं, अनुनय नहीं, अभिनय नहीं, परिणय नहीं !
उद्देश्य अब तक तय नहीं !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब यह सोचना बेकाम !

होता यदि मुझे भी स्वार्थ,
होता प्रिय नहीं परमार्थ,
होता अन्य ही कुछ लक्ष्य, होता अन्य ही कुछ नाम !
अब यह सोचना बेकाम !

आता यदि मुझे भी जाल,
थोड़ा सा जगत-जंजाल,
जग में इस तरह मैं हर जगह होती नहीं बदनाम !
अब यह सोचना बेकाम !

अब तो फँस चुकी उस ठौर,
बाहर पथ नहीं है और,
पीछे रो रहे हैं कर्म, आगे हँस रहा परिणाम !
अब यह सोचना बेकाम !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रह निर्दोष, लेना दोष !

रहकर पाप से भी दूर
हैं मिलते नहीं वरदान ;
रह अभिशाप से भी दूर
मिलता है न जल का दान ;

होती है भला किस कार्य से
किन वस्तुओं की प्राप्ति ;
इसका है असंभव पूर्णतः
करना कभी अनुमान ;
चरणों की सहज गति रोक, कर निज भावनाएँ मौन ;
अपने भाग्य पर भी कर यहाँ संतोष, लेना दोष !
रह निर्दोष, लेना दोष !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझको देख दुनियाँ ने अगर
बदला स्वयं इतिहास ;
वैसा ही रहा यह सूर्य
वैसा ही रहा आकाश ;

इसको देखकर यह सोच
लेना कब असंभव है ;
कि मेरा जड़ जगत में, चल-
प्रकृति में है भरा उपहास ;
सबका देख अपने प्रति अशोभन, छल भरा व्यवहार ;
निज पर खीझ, अपने पर यहाँ कर रोष, लेना दोष !
रह निर्दोष, लेना दोष !

'जैसा विश्व का हो मोड़
वैसी हो चरण की चाल' ;
यह सब वह करे जिसको
निभाना मोह मायाजाल ;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझसे बन न यह पाया
इसी से है बुरा यह हाल ;
संसृति बन खड़ी कंगाल
दुनियाँ बन गई जंजाल ;
बस बढ़ती चलूँ रह मौन, कर निज लोचनों को बन्द ,
रह मदहोश, अपने प्रति यहाँ कर होश, लेना दोष !
रह निर्दोष, लेना दोष !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब तो हँसना है केवल लत !

ज्योति-हीन आँखों के आगे,
मिटे सुकोमल दृश्य अभागे,
वर्षों बहे नियति के चरणों पर मेरे यह आँसू अविरत !
अब तो हँसना है केवल लत !

मरुथल, वन-झीहड़, जड़-जंगम,
कर न सके हैं मेरे दुख कम,
लो अब समझाने आये हैं काले बादल, ऊँचे पर्वत !
अब तो हँसना है केवल लत !

गये सभी जिनके वैभव छिन,
आये रोते चिल्लाते दिन—
वर्तमान को कुचल चुके हम, कहाँ भविष्यत ? कहाँ भविष्यत ?
अब तो हँसना है केवल लत !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथी दिवाली की रात !

छूकर तममय - हृदय - विशाल
मेरे दृग-दीपों की माल,
बुझ जाती हो जाती मौन, करके व्यंगों के आघात।
साथी दीवाली की रात !

धीमी धीमी ठण्डी ओस,
भरती निशि-पलकों का कोष,
डर कर दूर खड़ी निस्तब्ध, मेरे नयनों की बरसात !
साथी दीवाली की रात !

किसको है इतना अवकाश,
क्षण दो क्षण आ मेरे पास,
मुझसे पूछे मेरी भूल, दुख का कारण, सुख की बात !
साथी दीवाली की रात !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझको और हज़ारों हैं दुख !

दुख है जग के संशय का भी,
दुख है अपने निश्चय का भी;
दुख है अपने आदर्शों से
जीवन के क्रय-विक्रय का भी;
दोनों ओर कुआँ खाई है, पीछे हिमगिरि, जल निधि सम्मुख।
मुझको और हज़ारों हैं दुख !

मेरे बल में दुर्बलता है,
संयम में भी एक व्यथा है;
मेरी प्रति सीमित श्वासों में
भी सुख दुख की व्यापकता है;
जग संकेत उधर करता है, किंतु इधर है चरणों का रुख !
मुझको और हज़ारों हैं दुख !

मैं निरुपाय, न्याय पाने की
फिर भी मेरी अभिलाषा है;
मैं मानव हूँ, फिर भी मुझमें
अमरों की कोमल भाषा है;
पीछे फूलों के बंधन हैं, शूलों की शैया है उन्मुख !
मुझको और हज़ारों हैं दुख !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मौनतम आराधना मेरी न कोई जान पाया !

पंख उड़ सकते नहीं यदि
भावनाएँ ही न होतीं ;
प्राप्ति हो पाती नहीं यदि
कामनाएँ ही न होतीं ;

यदि न थोड़े स्वाति के कण
शून्य अंबर में बिखरते ;
तो न घन होता, न सागर,
और यह होता न मोती,
तृषित चातक साधना तेरी न कोई जान पाया !
मौनतम आराधना मेरी न कोई जान पाया !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाहता भगवान, उसका
भक्त भी भगवान होवे;
चाहता वरदान, जो दे दे
वही वरदान होवे;

चाहतीं कवि की सुकोमल
कल्पनाएँ; ओस बनकर,
मौन कवि के अश्रु का प्रति-
बिंदु शत शत गान होवे;
भक्त दृढ़तर साधना तेरी न कोई जान पाया!
मौनतम आराधना मेरी न कोई जान पाया!

हाथ, जो थे आज तक,
फैले किसी के भी न आगे;
सह सभी अभिशाप, थे
वरदान भी जिनने न माँगे;

आज जग के हेतु भिक्षा
माँगने को जब बढ़े ये,
रिक्त लौटे; सोचते हैं जग
पतित, या ये अभागे;
भिक्षु, पावन याचना तेरी न कोई जान पाया!
मौनतम आराधना मेरी न कोई जान पाया!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूर मैं करती रही थी
पंथ पर के शूल सारे;
किंतु कुछ वे थे, कि हँसते
थे सुमन जिनके सहारे;

वे चुभे जब, उस समय ही
फूल ने सौरभ लुटाया;
घोल मैंने मधु दिया
लेकर दृगों के बिंदु खारे;
लोक हित की कामना मेरी न कोई जान पाया!
मौनतम आराधना मेरी न कोई जान पाया!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुझसे कभी विरोध न संभव !

मैं निज आदर्शों की रानी,
निज बीते वर्षों की रानी,
राह बनी है जिन हाथों से, उनसे है गतिरोध न संभव !
मुझसे कभी विरोध न संभव !

जहाँ विश्व ने आग लगाई,
मैंने जल की धार बहाई,
मैंने समझौता चाहा है मुझसे है प्रतिशोध न संभव !
मुझसे कभी विरोध न संभव !

हार मुझे जाना ही होगा,
मरना, मिट जाना ही होगा,
जग के चरणों पर लोटेगा मृतःप्राय सा मेरा यह शव !
मुझसे कभी विरोध न संभव !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाई नहीं पूरी विजय !

करुणा स्वयं ममता न क्या ?
उपरांत दुर्बलता न क्या ?
पश्चात विह्वलता न क्या ?
फिर भी पिघल जाता हृदय दुख देखकर, सुनकर विनय !
पाई नहीं पूरी विजय !

अपराध भोलापन यहाँ,
अभिशाप है जीवन यहाँ,
वरदान है क्रंदन यहाँ,
क्यों हास्य की है भीख जग से माँगता भावुक हृदय !
पाई नहीं पूरी विजय !

हँस-रो कली बनती सुमन,
फिर है गिरा देती पवन,
है चूम लेता धूल-कण,
निर्माण वह ही चाहता है भाग्य में जिसके निलय !
पाई नहीं पूरी विजय !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कविता न अब वरदान है !

देकर हृदय को प्रेरणा,
देकर हृदय को चेतना,
देकर हृदय को वेदना,
दुर्बल हृदय करती; रहा जो आज तक पाषाण है !
कविता न अब वरदान है !

देती नये कुछ चाव है,
देती नये कुछ भाव है,
देती नये कुछ घाव है,
है चाहती अपना बनाना, जो रहा भगवान है !
कविता न अब वरदान है !

कल का न इसको होश है,
देती नहीं संतोष है,
कुछ जोश है, कुछ रोष है,
मेरे लिये यह बन गई अवसान का निर्माण है !
कविता न अब वरदान है !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चलेगा कब तक यह संग्राम ?

विश्व से मैं भी थोड़ी क्रुद्ध,
विश्व भी मेरे पूर्ण विरुद्ध;
भाग्य का यह निश्चित संघर्ष, हो गया प्रतिदिन का ही काम !
चलेगा कब तक यह संग्राम ?

खड़ी हूँ जहाँ, वहाँ पर ताप,
निराशा पीछे, सन्मुख शाप,
चरण गतिहीन, हृदय गतिवान, मिलेगा नहीं कभी विश्राम !
चलेगा कब तक यह संग्राम ?

सत्य का होता है पथ एक,
और उस पर हैं पथी अनेक,
प्रवासी ! यह तो है मध्याह्न; दूर है लक्ष्य, दूर है शाम !
चलेगा तब तक यह संग्राम !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यर्थ होंगे तब मेरे गीत।

सोच कर आएगा पतझार,
किसी का बाल्य विहग सुकुमार;
मान ले पहले अपनी हार,
बिना सौरभ के, मधु से हीन, कहीं यदि जाए मधुऋतु बीत!
व्यर्थ होंगे तब मेरे गीत!

किसी की उर डाली के पास,
उतर कर आ जाए आकाश;
किन्तु हो यदि न उसे विश्वास,
नेत्र इतनी जल्दी से प्रबल-प्रकृति पर पा लेते हैं जीत!
व्यर्थ होंगे तब मेरे गीत!

सो चुके थे जो उर के तार,
किसी ने थे रख दिए सँभार;
कहें यदि नहीं हृदय का भार,
कहाँ पर वीणा, कहाँ पर प्रीति, कहाँ पर वही पुनीत अतीत!
व्यर्थ होंगे तब मेरे गीत!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबकी जीत, सबकी हार !

सबको प्राप्त है सुख शोक,
सूना तम, अलस आलोक,
सबके पास होती मुक्ति, सबको प्राप्त कारागार !
सबकी जीत, सबकी हार !

संध्या ने लिया तम भार,
जिसमें शशि हुआ साकार,
रोती रात, दिव्य प्रभात में, यह कर रही स्वीकार !
सबकी जीत सबकी हार !

मेरा देख काव्य-निकेत,
दुनियाँ कर रही संकेत,
उतना ही क्षणिक मधुमास, जितना है विवश पतझार !
सबकी जीत सबकी हार !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिल गया बस एक तारा !

भावना में मुक्ति देने,
याचना में तुष्टि देने
के लिये दृग माँगते थे सिंधु से नभ का किनारा !
मिल गया बस एक तारा !

छू न ले शशि की सुनहली,
झिलमिलाती ज्योति पहली,
तम कहीं; यह रोकने को रात ने आँचल पसारा !
मिल गया बस एक तारा !

लड़खड़ा कर गिर न जाएँ,
पंथ पर ही रुक न पाएँ,
मिल गया कंपित करों को एक कंधे का सहारा !
मिल गया बस एक तारा !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कल तक पूरा नीड़ बनेगा !

कल तक मेरे दुख का ताना,
भर अपने में सुख का बाना,
पीड़ित प्राणों को ढकने के लिये पुण्य परिधान बुनेगा !
कल तक पूरा नीड़ बनेगा !

नींव हृदय, ममता का गारा,
ले निश्चय का ईंट-सहारा,
कर्तव्यों का कुशल नियंता आदर्शों का महल चुनेगा !
कल तक पूरा नीड़ बनेगा !

मानव का कल्याण जहाँ पर,
बन जायेगा पूजित पत्थर,
जहाँ भावना भक्ति बनेगी और भक्त भगवान बनेगा !
कल तक पूरा नीड़ बनेगा !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब तो नीड़ के निर्माण में मैं व्यस्त आठों याम !

जिसमें कर्म का प्रतिकार,
जिसमें धर्म का प्रतिकार।
वह ही चेतना आकर यहाँ ले चार क्षण विश्राम !
अब तो नीड़ के निर्माण में मैं व्यस्त आठों याम !

जग में घूम कर सर्वत्र,
कुछ तिनके किये एकत्र,
अब तो नीड़ के निर्माण में मैं व्यस्त आठों याम !
अब तो नीड़ के निर्माण में मैं व्यस्त आठों याम !

संध्या दूर है या पास,
है पतझार या मधुमास,
इसके जानने का भी कभी
मुझको नहीं अभ्यास ;
मुझको काम से है काम; मुझको काम से है काम !
अब तो नीड़ के निर्माण में मैं व्यस्त आठों याम !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँगता है रवि किरण पसार !

व्यक्ति के जन्म-जात अधिकार ;
देश के जन्म-जात अधिकार ;
लोक के जन्म-जात अधिकार ;
विश्व के जन्म-जात अधिकार ;
जीव के जन्म-जात अधिकार ;
जन्म के जन्म-जात अधिकार ;

सृष्टि का एक प्रतीक उदार, माँगता मानव है ललकार!

व्यक्ति के जन्म-जात अधिकार !
देश के जन्म-जात अधिकार !
लोक के जन्म-जात अधिकार !
विश्व के जन्म-जात अधिकार !
जीव के जन्म-जात अधिकार !
जन्म के जन्म-जात अधिकार !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मौनतम भावों की अभिव्यक्ति ;
प्राण की मुक्ति, अधर की मुक्ति ;
और जीवन के प्रति अनुरक्ति
वही अनुरक्ति कि जिसकी शक्ति ;

भोग करने में नर स्वच्छंद, और मानव का मन-सुकुमार !

माँगता है रवि किरण पसार !
व्यक्ति के जन्म-जात अधिकार !
देश के जन्म-जात अधिकार !
लोक के जन्म-जात अधिकार !
विश्व के जन्म-जात अधिकार !
जीव के जन्म-जात अधिकार !
जन्म के जन्म-जात अधिकार !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शक्ति का संचय है अपराध ;
व्यक्ति का निश्चय है अपराध ;
नियति का निर्णय है अपराध ;
समन्वय की मानव को साध ;

जिसे दे देना है कर्तव्य, नहीं यह कोई है उपकार !

माँगता है रवि किरण पसार !
व्यक्ति के जन्म-जात अधिकार !
देश के जन्म-जात अधिकार !
लोक के जन्म-जात अधिकार !
विश्व के जन्म-जात अधिकार !
जीव के जन्म-जात अधिकार !
जन्म के जन्म-जात अधिकार !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिले तप, नहीं मिले वरदान ;
मिले गति, गति से निर्मित प्राण ;
प्राण में श्वासों का निर्माण ;
और निर्माणों में बलिदान ;

वही बलिदान कि जिससे शांत अखिल जग-जग के हाहाकार !

माँगता है रवि किरण पसार !
व्यक्ति के जन्म-जात अधिकार !
देश के जन्म-जात अधिकार !
लोक के जन्म-जात अधिकार !
विश्व के जन्म-जात अधिकार !
जीव के जन्म-जात अधिकार !
जन्म के जन्म-जात अधिकार !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीघ्र प्रकाशि

जयंती—

देश की वर्तमा
तर्कपूर्ण विश्लेषण
करनेवाला कविता-

प्रकाशक—श्री
गंगा-पुस्तव

श्यामा—

जीवन उपवन में
में मंत्र मुग्ध सी बौ
पर अपने करुण गी

प्रकाशक—यु

अप्रकाशि

पंचमी, पांचाली,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi